Sem. 6, MJ-12

तुम कब जाओगे, अतिथि

'तुम कब जाओगे, अतिथि' आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ व्यंग्यकार शरद जोशी जी की बहुचर्चित रचना है। व्यंग्य वस्तुतः साहित्य की वह विधा है जहाँ रचनाकार सामाजिक विसंगतियों का प्रत्यक्षतः चित्रण न कर परोक्षतः व्यंजना के माध्यम से ~~कार~~ करता है। इससे व्यंग्य में मारक क्षमता अधिक होती है। जोशी जी की व्यंग्य-रचनाएँ सम्प्रेषण की समस्त विविधताओं, भाषिक अनूठेपन तथा शिल्पगत भंगिमाओं के समन्वित रूप में हिन्दी-व्यंग्य को सार्थक जमीन प्रदान करती हैं।

प्रस्तुत व्यंग्य रचना आधुनिक संदर्भ में 'अतिथि देवो भव' जैसे उपनिषद्-वाक्य की अर्थहीनता एवं विसंगति को भाषिक ~~शस्त्र~~ शस्त्र द्वारा व्यंजित करती है। इस रचना में लेखक ने ऐसे व्यक्तियों को ~~को~~ अपने व्यंग्य-प्रहार का लक्ष्य बनाया है, जो दूसरों के घरों में अतिथि रूप में जाते हैं; परन्तु बहुत समय तक वहीं जम जाते हैं, निकलने का नाम नहीं लेते। जोशी जी ने ऐसे अतिथि पर व्यंग्य-बाण की वर्षा करते हुए यह संदेश दिया है कि आदर्श अतिथि वह है जो अपने आने की पूर्व सूचना दे, कुछ ही दिन के लिए आतिथ्य ग्रहण करे और वापस चला जाए। एक अच्छा अतिथि वही हो सकता है जिसे अपनी मर्यादा का ज्ञान हो, अपने आतिथेय की भावना का सम्मान करे। जो अतिथि बिना पूर्व-सूचना के आकर कई दिनों तक अपना सत्कार करवाते हैं, वे आतिथेय की आर्थिक दुरवस्था का कारण बनते हैं।

प्रस्तुत रचना का गठन जोशी जी ने स्वयं को केन्द्र में रखकर कथानक-रूप में किया है। कथानायक अपनी पत्नी के साथ घर में चार दिन से आये अतिथि को ~~संबोधित~~ मनसा संबोधित करते हुए आतिथ्य-पीड़ा को ~~चि~~ चित्रित करता है। लेखक के घर पर चार दिनों से रुके अतिथि को देख उनका मन कहता है, कि 'तुम्हें देखते ही मेरा बटुआ काँप गया था'। फिर भी, अतिथि का सत्कार लेखक मरसक मुस्कान के साथ करता है।

रात के भोजन को भी अतिथि के सम्मान में उसने भारी-भरकम डिनर का रूप दिया था। दूसरे दिन भी प्रसन्नता को चेहरे पर ओढ़ते हुए 'लंच' का गरिमापूर्ण भोजन कराया गया तथा अतिथि को सिनेमा भी दिखाया गया। लेखक को यही आशा थी कि दूसरे ही दिन अतिथि चले जाएँगे। किन्तु, ऐसा नहीं हुआ। इधर अतिथि आराम से बैठकर सिगरेट के छल्ले उड़ा रहा है और उधर लेखक उसके सामने ही कैलेण्डर की तारीखें बदल-बदलकर उसे जाने का संकेत दे रहा है। तीसरे दिन अतिथि द्वारा धोबी को कपड़े देने की बात ने लेखक के मर्म पर चोट कर ही दिया। पत्नी ने यह सुनकर आशंका और भय से अपनी आँखें तरेरी थी कि अतिथि अधिक दिनों तक ठहरेगा।

चौथे दिन लॉण्ड्री से कपड़े धुलकर आने के बावजूद अतिथि नहीं जाता है, तो लेखक चिन्ता के गर्त में डूबता जाता है। बातचीत के सभी विषयों का चुक जाना, दोनों के मध्य चुप्पी का पसरना, भावनाओं का गालियाँ बनना, सौहार्द का समाप्त होना, भोजन में खिचड़ी का बनने लगना, 'स्वीट होम' का स्वीटनेस खत्म होना आदि ऐसी स्थितियाँ बनने लगती हैं कि लेखक अब उसे 'गेट आउट' भी कह देना चाहता है। अतिथि का देवत्व भी अब दाँव पर लग चुका है, क्योंकि मनुष्य और देवता ज्यादा देर साथ नहीं रह सकते।

आतिथेय की पीड़ा को इस रचना ने सहनशीलता की सीमा तक उजागर किया है। रचना में जोशी जी के व्यंग्य की धार बड़ी पैनी है। प्रत्येक पंक्ति की भाषा में वह मारक क्षमता है जो अतिथि के अनावश्यक अतिथि बने रहने पर प्रहार करता है— "लाखों मील लम्बी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रोनट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे।" भाषा के व्यंग्य को तीक्ष्ण बनाने में जोशी जी ने अंग्रेजी शब्दों का भी भरपूर उपयोग किया है। हाईटाईम, डिनर, गेट आउट जैसे प्रयोग से रचना का व्यंग्य अत्यंत प्रभावी हो गया है। निश्चय ही, 'तुम कब जाओगे, अतिथि' हिन्दी व्यंग्य-लेखन के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है।